

मैथिली  
( अनिवार्य )

समय : तीन घण्टा

पूर्णांक : 300

**प्रश्नपत्र विषयक विशेष निर्देश**

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व देल गेल निर्देशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ू

सभ प्रश्न अनिवार्य अछि।

प्रत्येक प्रश्न/भागक अंक ओकरा सामने अंकित अछि।

उत्तर मैथिली (देवनागरी लिपि) मे लिखू, जाधरि कि प्रश्नमे कोनो दोसर निर्देश नहि हो।

प्रश्नमे शब्दक संख्याक ध्यान राखू, अधिक वा कम शब्दमे उत्तर लिखला पर अंक काटल जा सकैत अछि।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिकामे रिक्त छोड़ल स्थानकेँ स्पष्ट रूपसँ अवश्य काटि दी।

MAITHILI  
( Compulsory )

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 300

**QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS**

**Please read each of the following instructions carefully  
before attempting questions**

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

1. निम्नलिखित कोनो एक विषय पर 600 शब्दमे निबन्ध लिखू :

100

- (a) सर्जनात्मकताक पोषण करयवाला शिक्षाक आवश्यकता
- (b) भारतमे वन्यजीवनक संरक्षणक चुनौती सब
- (c) किशोर मानस पर फिल्मक प्रभाव
- (d) दिव्यांग सबहक सशक्तीकरण

2. निम्नलिखित गद्यांशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ि ओकर आधार पर अन्तमे देल गेल प्रश्नक सटीक एवं स्पष्ट उत्तर अपना शब्दमे लिखू :

12×5=60

कतेको हजारवर्ष पूर्व तक मनुख धरती पर शिकारी मात्र छल। नवपाषाण युग तक ओ कृषि हेतु बसब प्रारम्भ नहि कयने छल। दूरदराजक क्षेत्रमे भ्रमण कयने बिना ओ जमीनक जोताय कय के भोजनक आपूर्ति बढ़बयमे सक्षम भेल आओर लगातार कृषिकेँ उन्नति करयमे लागल रहल। आइ धरि पहिनेक तुलनामे ओ अधिक आ नीक भू-उपजा लयमे सक्षम रहल अछि। मुदा जतय तक समुद्रक सम्बन्ध अछि, ओ आइ धरि सेहो शिकारी मात्र अछि। ओ माछ आ दोसर-दोसर जल-प्राणीके पकड़ैत अछि मुदा ओकर सतत वृद्धि आ आपूर्तिक हेतु ओ प्रयत्न त' सीमित मात्र कय रहल अछि। अखन तक ओकरा लोकनिकेँ जलीय शिकारसँ अत्यधिक पौष्टिक प्रोटीनक प्राप्ति भेल छैक। ई भू-कृषिसँ प्राप्त प्रोटीनक आपूर्तिक पूरक अछि। मुदा दुनियाक बढ़ैत आबादीक कारणेँ मनुष्यकेँ शीघ्रहि समुद्रसँ एतेक बेसी प्रोटीनक आवश्यकता पड़ि सकैत छैक जाहिसँ एतेक भारी मात्रामे सदैव आपूर्ति सेहो कम पड़ि सकैत छैक, खतरामे पड़ि सकैत छैक। ताहि कारणेँ मनुष्यकेँ समुद्री खेतीक माध्यमसँ पर्याप्त आपूर्ति प्राप्त करबाक हेतु बहुत प्रयास करय पड़ैतैक।

लघु स्तर पर माछ पोसब पोखरि ओ झीलमे पहिनेसँ सफलतापूर्वक कयल जा चुकल अछि। विशेषरूपसँ जलविद्युत् परियोजना सबहक हेतु बान्हक (बाँध) निर्माण द्वारा बनाओल गेल कृत्रिम झील सबमे ई कार्य कयल गेल छैक। पीबय (मीठ) वाला पानिक पोखरिमे माछक पैदावारसँ प्रोटीनक आपूर्तिमे पहिनेसँ अधिक वृद्धि भेल छैक। ओहिमेसँ थोड़ेककेँ विकास ग्रामीण समुदाय सबमे कृषि-अधिकारी लोकनिक मदद ओ पर्यवेक्षणसँ भए रहल छैक।

एक बेर माछक पोखरिकेँ (तालाब) परिपक्व (युवा) माछसँ समृद्ध कय देला पर माछ सबहक स्वस्थ वातावरणमे विकास संभव भए पवैत छैक ओ ओकर भोजनक पर्याप्त आपूर्ति सेहो भए जाइत छैक। पानिमे भारी संख्यामे तैरैत प्लवक—सूक्ष्मजीव ओ वनस्पति—जलीय प्राणीक मुख्य खाद्य होइत छैक। छोटका माछ सब एकरा खाइत अछि पश्चात् अपनासँ पैघ माछक भोजन बनि जाएत अछि। प्लवक पानिमे विद्यमान खनिज सबसँ विकसित होइत अछि तँ प्लवकक (Plankton) मात्राकेँ पानिमे अतिरिक्त उर्वरक द्वारा बढ़ाओल जा सकैत अछि।

यद्यपि समुद्री खेती व्यवहारिक ओ लाभदायक दुनू भए सकैत अछि, मुदा एहिसँ पहिने कइएकटा समस्याकेँ हल करय पड़त। उदाहरणस्वरूप समुद्रक ओहि भागमे खाद्य (उर्वरक) देब उपयोगी नहि होएत, जतय कि समुद्रक तेज धार ओकरा मीलक-मील दूर अनुत्पादक पानिमे लय जाइत छैक। यदि माछ पोसयवाला लोक खाद्य (उर्वरक)केँ एक निश्चित स्थान (क्षेत्र) तक सीमित कय सकय, तखनहुँ ओकरा 'अपन क्षेत्रहि'तक खाद्य-पोषित माछकेँ राखि सकवाक तरीका ताकय

पड़तैक। माछ पोसयवाला व्यक्तिके अपन खर्चक अधिकतम लाभ लेबाक हेतु माछके भोजन देवाक एहन तरीका ताकय पड़तैक, जाहिसँ ओ भोजन ओहि माछके भेटैक जकरा ओ खुआबै चाहैत अछि। ओकरा अखाद्य जलजीव सबके हटावैक (निराई) हेतु तरीका सोचय पड़तैक, जाहिसँ कि ओ ओकर माछक भोजन साझी नहि कऽ सकय।

वस्तुतः एहि समस्या सबके दूर करब बहुत आसान नहि हैत—विशेषकय समुद्रक विशालताके देखैत, जे धरतीक सतहक लगभग तीन-चौथाई भागके छेकने छैक। समुद्रक पानि पोखरिसभ ओ झील सभक तुलनामे निरन्तर गतिमान रहैत छैक। प्रायः समस्या सबके आस्ते-आस्ते (धीरे-धीरे) हल (निदान) कएल जेतैक। निकट भविष्यमे मनुक्ख (मनुष्य) महाद्वीपक लग उत्थर (उथले) अप-तटीय पानिमे लघु स्तर पर माछ-पालन शुरू कय सकैत अछि। जतय ओ एहन माछक संग्रहण कय सकैत अछि जकर उत्पादन ओ करय चाहैत अछि। अपन माछक भोजनके खा जायवाला अवांछनीय जलजीवके हटा सकैत अछि। आवश्यकताक अनुसार ओहि क्षेत्रमे खाधक (उर्वरकक) उपयोग कय सकैत अछि आ अंततः समय-समय पर परिपक्व माछक फसिलके एकत्रित कय सकैत अछि।

- (a) शिकारक तुलनामे कृषि कोन प्रकारे नीक छैक तथा भविष्यमे समुद्री खेती कियैक आवश्यक हेतैक?
- (b) माछ-पालनमे खाधक (उर्वरकक) की भूमिका अछि?
- (c) समुद्रक कोन हिस्सामे माछक पालन प्रारम्भ कएल जा सकैत अछि?
- (d) 'निराई'सँ आहाँ की बूझैत छी?
- (e) भविष्यमे समुद्री खेतीक समस्याक समाधान कोना कएल जा सकैत अछि?

3. निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण मात्र एक-तेहाइ शब्दमे लिखू। शीर्षकक उल्लेख करवाक प्रयोजन नहि अछि। संक्षेपण अपन भाषामे लिखू :

60

भारतक विशाल आबादी ग्रामीण अछि। हुनक सामाजिक-आर्थिक स्थिति ओ जीवनक गुणवत्तामे सुधारक हेतु ग्रामीण बुनियादी ढाँचामे सर्वांगीण विकासक आवश्यकता अछि। जाहिसँ समान ओ समावेशी विकासक दीर्घपोषित उद्देश्य सबके प्राप्त कयल जा सकय। ग्रामीण बुनियादी ढाँचाक एक महत्वपूर्ण घटक पेयजल व्यवस्था अछि। पानि निस्सन्देह एक महत्वपूर्ण लोकहित अछि। नागरिकक माँगके पूरा करक हेतु पानिक बुनियादी ढाँचाक निर्माण हेतु सार्वजनिक निवेशमे वृद्धि करवाक आवश्यकता छैक। एकटा जल-सुरक्षित राष्ट्र नहि मात्र अपन नागरिकके स्वच्छ ओ सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराओत, अपितु एकटा स्वस्थ ओ आर्थिक रूपसँ उत्पादक समाजके सेहो सुनिश्चित करत। यद्यपि भारतक विशाल ग्रामीण आबादीक पीबैक पानिक आवश्यकताके पूरा करब एकटा कठिन कार्य अछि, जकर मुख्य कारण स्थापित पेयजल आपूर्तिक क्षमतामे कमी, सामाजिक-आर्थिक विकासक निम्न स्तर, शिक्षा ओ पानिक उपयोग आ उपभोगक विषयमे जानकारीक अभाव अछि।

संविधानक अनुच्छेद 47 राज्यक सार्वजनिक स्वास्थ्यके नोक बनएवाक हेतु सुरक्षित पेयजल उपलब्ध करैवाक आदेश दैत छैक। स्वच्छ पेयजलक व्यवस्था, बीमारी आओर घातक घटनाके कमी आनैत अछि तथा जीवन-स्तरके नोक बनएवामे मदद करैत अछि। देशक करोड़ोंक आबादीक समग्र स्वास्थ्यमे सुधारक हेतु स्वच्छ ओ सुरक्षित पेयजल एवं स्वच्छताक प्रावधान महत्वपूर्ण अछि।

निरन्तर विकास पानिक उपलब्धता ओ स्वच्छता हेतु निरन्तर प्रबन्धन सुनिश्चित करवाक आवश्यकता पर बल दैत छैक। सुरक्षित पेयजल तक पहुँचक मामलामे एहिसँ इएह तात्पर्य निकलैत अछि कि 'किओ पाछू नहि छूटि जाय' जेकि एहि वर्ष 'विश्व जल दिवस'क थीम सेहो छल। 'विश्व जल दिवस' प्रति वर्ष 22 मार्चके मनाओल जाइत अछि।

सरकार ग्रामीणक हेतु सुरक्षित पेयजल सुनिश्चित करवाक हेतु ध्यान केन्द्रित कय रहल अछि। सरकार द्वारा समय-समय पर एहि क्षेत्रमे सोझाँ आबयवाला चुनौती सबसँ निपटवाक हेतु महत्वपूर्ण डेग सब उठाओल जा रहल अछि। ग्रामीण जल-आपूर्ति योजना सबहक क्रियान्वयनक हेतु अनुदान देवाक संग-संग क्रियान्वयन ओ रखरखावक तरीका (पहलू) एवं भूजल पुनर्भरण हेतु सेहो कारगर डेग उठाओल गेल अछि। किछु अन्य तरीकामे वर्षाजल संचयन सेहो छै जेकि बहुत महत्वपूर्ण डेग अछि एवं ग्रामीण क्षेत्रमे सतत रूपसँ सुरक्षित पेयजल आपूर्तिमे सहायक सिद्ध भए सकैत अछि।

ग्रामीण क्षेत्रमे कृत्रिम पुनर्भरण ओ वर्षाजल संचयन ढाँचाक निर्माण हेतु सरकार मास्टर प्लान पर कार्य कय रहल अछि। भारतमे एहन सफलताक खिस्सा सबहक भरमार अछि जेकि जल संचयनक हमर प्राचीन परंपरागत ज्ञान ओ विवेकक दिस आकर्षित करैत अछि।

2001 मे तमिलनाडु सरकार प्रत्येक परिवारक हेतु वर्षाजल संरक्षणक आधारभूत संरचना राखब अनिवार्य कय देलक। बैंगलोर ओ पुणे एहन नगरमे सेहो एहन प्रयोग कएल गेल जतए आवास-समिति सब द्वारा वर्षाजल संचयन अपेक्षित अछि। दोसरो राज्य सबमे एहि प्रकारक प्रयास सब भेल।

भूजलक अति दोहन भारतवर्षमे एक मुख्य समस्या अछि। एकरा रोकवाक हेतु राज्य सरकार सब द्वारा नियामक तंत्रक आवश्यकता छैक। गम्भीर रूपसँ प्रभावित क्षेत्र सबमे अत्यधिक इनारक खोदाइ पर प्रतिबन्ध लागक चाही। पेयजलक आपूर्ति योजना सबकेँ प्रभावी बनएवाक हेतु पंचायती राज संस्था सबहक अधिक भागीदारीक आवश्यकता छैक। तत्काल पंचायती राज संस्थाक भूमिका अति न्यून अछि। ग्रामीण समुदाय, गैर-सरकारी संगठन एवं सरकारक सुविधादाता तथा सह-वित्तपोषकक रूपमे भागीदारी सफल रहल अछि, हमरा स्मरण राखक चाही कि ग्रामीण क्षेत्रमे पेयजलक उपलब्धता एवं पहुँचक दायरा बढ़ावैक हेतु हमरा ग्रामीण समुदायक सक्रिय सहयोगसँ पानिक न्यायसंगत संरक्षण ओ उपयोगक हेतु सब प्रकारक प्रयास करवाक आवश्यकता अछि।

समुदायक भागीदारी, संचालन एवं रखरखावक आर्थिक व्यवहारिकताकेँ बढ़वैत अछि। ई अन्तर्निहित समुदायकताक कारणेँ बेसी नोक रखरखाव ओ तैयार कएल गेल प्रणालीक जीवन कालकेँ सेहो बढ़वैत अछि। पीबैक पानिक स्रोत लग नहि मात्र स्वच्छता बना कय राखयमे समुदायक महत्वपूर्ण भूमिका छैक अपितु ओहि तरीका ओ साधनकेँ सेहो सुधारवाक छैक, जकरा द्वारा संग्रह, भंडारण ओ उपयोग करैत समय प्रदूषणसँ बचवाक हेतु पानि एकत्र कएल जाइत छैक।

ग्रामीण क्षेत्र सबसे एहि योजना सबहक प्रभावी कार्यान्वयन हेतु पंचायती राज संस्था सब, स्वयं सहायता समूह ओ सहकारी समिति सबहक माध्यमसँ समुदायक सक्रिय भागीदारीक माँग कयल जाइत छैक। ताकि 2030 तक 'हर घर जल'क लक्ष्यकेँ पूरा कयल जा सकय ओ दीर्घकालिक टिकाउ समाधानकेँ साकार कयल जा सकय।

4. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अंग्रेजीमे अनुवाद करू :

20

जखन कोनो व्यक्ति अपना आपकेँ देखैत अछि त ओ अपना बारेमे गलत अनुमान लगा लैत अछि। ओ अपन उद्देश्य मात्रकेँ देखैत अछि। बेसीतर लोक नीक उद्देश्य लय के चलैत अछि आ मानि लैत छथि कि ओ जे कोनो कार्य कय रहल छथि तकर परिणाम नीक हैतैक। कोनो व्यक्तिक हेतु अपन कार्यक तटस्थ मूल्यांकन कठिन अछि। जे भए सकैत छैक ओ प्रायः होइत सेहो छैक कि ओकर नीक उद्देश्यमे विरोधाभास उत्पन्न भए जाइत छैक। बेसीतर लोक कार्य करबाक उद्देश्यसँ अबैत छथि आ अपन कार्य तेहन ढंगसँ करैत छथि जे हुनका सुविधाजनक लगैत छनि; आ साँझकेँ सन्तुष्टिक भावना नेने घर चल जाइत छथि। ओ अपन कार्यक मूल्यांकन नहि करैत छथि। ओ अपन उद्देश्यक मात्र मूल्यांकन करैत छथि। एहन मानल जाइत अछि कि कोनो व्यक्ति अपन कार्यकेँ समयक भीतर समाप्त करवाक इच्छा रखैत अछि आ यदि एहिमे विलम्ब होइत छैक त ई ओकर नियंत्रणक बाहरक गप होइत छैक। कार्यमे देरी करबाक हुनक कोनो इच्छा नहि रहैत अछि। मुदा यदि ओकर कार्यक तरीका वा आलस्य देरीक कारण बनैत छैक त की ई ओ जानिकेँ नहि कएल गेलैक?

समस्या ई अछि जे हम प्रायः जीवनके संग संघर्ष करय के बदला एकर विश्लेषण करय लगैत छी। लोक अपन असफलतासँ किछु सिखवाक बदला या ओकर अनुभव लेबाक वनिस्पत, ओकर कारण एवं प्रभावक चीर-फाड़ करय लगैत छथि। कठिनाय एवं समस्याक माध्यमसँ भगवान हमरा बढ़वाक अवसर प्रदान करैत छथि। तँ जखन आहाँक उम्मीद, सपना एवं लक्ष्य चूर-चूर भए गेल हो त' कारणक भीतर जाकए अनुसंधान करू। आहाँकेँ ओकर भीतर नुकायल कोनो नीक अवसर अवश्य भेटत।

लोकक कार्यकुशलता बढ़ावैक हेतु हुनका प्रेरित करब एवं हताशासँ उबरवाक हेतु प्रत्येक नेताक लेल बराबर एकटा चुनौती भरल कार्य होइत छैक। संगठन सबसे बदलाव आनयके मामलामे एकटा नेता स्वीकृति ओ प्रतिरोधक बीचक रास्ताक खोज करैत अछि।

5. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू :

20

Freedom has assuredly given us a new status and new opportunities. But it also implies that we should discard selfishness, laziness and all narrowness of outlook. Our freedom suggests toil and the creation of new values for old ones. We should so discipline ourselves as to be able to discharge our responsibilities satisfactorily. If there is any one thing that needs to be stressed, it is that we should put in action our full capacity, each one of us in productive effort—each one of us in his own

sphere, however, humble. Work, unceasing work, should now be our watchword. Work is wealth, and service is happiness. The greatest crime today is idleness. If we root out idleness, all our difficulties, including even conflicts, will gradually disappear. Whether as constable or high official of the state, whether as businessmen or industrialist, artisan or farmer, each one is discharging the obligation to the state, and making a contribution to the welfare of the country. Honest work is the anchor to which we should cling if we want to be saved from danger or difficulty. It is the fundamental law of progress.

6. (a) निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू : 2×5=10
- (i) अनुकूल
  - (ii) संकल्प
  - (iii) आगम
  - (iv) उत्कर्ष
  - (v) अतिवृष्टि
- (b) निम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द लिखू : 2×5=10
- (i) सत्य बजनिहार
  - (ii) जे सब ठाम व्यापक हो
  - (iii) जे कम बाजय
  - (iv) जकर उल्लेख कयल जा सकय
  - (v) जे पालन करय
- (c) निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची शब्द लिखू : 2×5=10
- (i) धरती
  - (ii) सूर्य
  - (iii) महादेव
  - (iv) वृष्टि
  - (v) राति

(d) निम्नलिखित शब्द-युग्ममे भेद स्पष्ट करू :

2×5=10

(i) पातर-पाँतर

(ii) चालि-चाली

(iii) जड़-जर

(iv) चानि-चानी

(v) पुरान-पुराण

\*\*\*

